



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या
५

कॉलम
६-८

दैनिक भास्कर

**चौधरी चरण सिंह कृषि विवि को मुलेठी के सिल्वर
नैनो कणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट
निमेटोड को नियंत्रण करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनो कण**

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-१) का उपयोग करके सिल्वर नैनो कण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम. बी.बी.एंड बी.) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी व. डॉ. निर्शा देवी ने विकसित किया है। विवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि पॉलीहाऊस, ग्रीनहाऊस, बागवानी व सिंजियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गाठ

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनो कणों के फायदे

पौधों के इस्तेमाल से नैनो कणों को बनाने की विधि में केमिकल्स का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के सिल्वर से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनो कण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनो कणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी बजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है।

सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉलीहाऊस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो

जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। जिसकी बजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैरेस भूमि	१. ३. २५	१	५-८

निमेटोड को नियंत्रित करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनोकण : प्रो. काम्बोज

मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर एचएयू को मिला पेटेंट

हरिभूमि न्यूज || हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एमबीबी एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदात किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ।



हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ।

फोटो: हरिभूमि

किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया।

इस कार्य के लिए सूत्रकृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानकर का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच पहले लैब में, फिर स्क्रीन हाऊस में की, दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि कर्मशियल

केमिकल नेमैटिसाइड (वाणिज्यिक रासायनिक सूत्रकृमिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों की बहुत कम मात्रा ही सूत्रकृमिनाशक के रूप में प्रयोग पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इजाद की गई सिल्वर नैनोकण बनाने की यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है।

विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अध्याता डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेठी

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे

पैदों के हस्तेमाल से जैवों काणों को बनाने की विधि में केमिकल्स का कम उपयोग होता है और काहं अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के हस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित हल सिल्वर नैनो काणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है। जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को बनारे गुक्सान पहुंचता है। इस अवसर पर ओससी डॉ. अतुल दीगड़ा, माजव सासाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, मांडिया रडवाइजर डॉ. संदीप आयंव एसवीसी कपिल अरोड़ा उपस्थित रहे।

(वेरायटी एचएम-1) के मूल अर्क का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नेमैटिसाइडल (सूत्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विट्रो व इन विंबो स्थितियों में भी की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत स्पेशल	१३.३.२५	५	५-८

निमेटोड को नियंत्रण करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनोकण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 6 मार्च (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एच.एम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम.बी.बी.एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधाधिर्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदात किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पॉलीहाऊस, ग्रीनहाऊस, बागवानी व संबिंदियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ सूक्रकृषि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉलीहाऊस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ।

फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के लिए सूक्रकृषि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानाकर का सहयोग लिया गया। शोधाधिर्थियों ने यह जांच पहले लैब में, फिर स्क्रीन हाऊस में की, दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जरी रहा। प्रो. काम्बोज ने बताया कि कर्मशिर्यल कैमिकल नेमैटिसाइड (वेरायटी एच.एम-1) के मूल अर्क का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में

परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए है। इन नैनोकणों में नेमैटिसाइडल (सूक्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विट्रो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे : पौधों के इस्तेमाल से नैनो कणों को बनाने की विधि में कैमिकल्स का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनो कणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अनुल ढींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व एसवीसी कपिल अरोड़ा उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार

पत्र का नाम
अभूतजाला

दिनांक

७.३.२५

पृष्ठ संख्या

२

कॉलम

६-८

एचएयू को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एमबीबीएंडबी) की पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पृष्ठा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थी डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि पॉली हाउस, ग्रीनहाउस, बागवानी व सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ सूत्र कृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक



पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। सोन : आयोजक

नुकसान देखा गया है। पॉली हाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है, जिसकी वजह से किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के

लिए सूत्र कृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच पहले लैब में, फिर स्क्रीन हाउस में की। दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब के सरो	७.२.२५	३	१-४

हकृति को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

हिसार, ६ मार्च (ब्लूसे): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वैरायटी एच.एम.-१) के उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रीशोमिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम.बी.बी.एंड.बी.) को पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पा खबर के नेतृत्व में उनके पीएच.डी. शोधाधिकारी डॉ. कनिका गानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम

1970 के अंतर्गत २० वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदत किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पॉलीहाइड्स, ग्रीनहाइड्स, ब्रांवानी व सम्ब्लियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गंठ सूत्रक्रमि) के संक्रमण से बहुत अधिक तुक्सान देखा गया है। पॉलीहाइड्स में नियोत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में कृद्धि हो जाती है और इनकी आत्माधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ।

तुक्सान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट सूत्रक्रमिनाशक के रूप में पर्याप्त पाइ गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों का विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इंजाद की गई सिल्वर नैनोकण बनाने वाली

केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि कमर्शियल कैमिकल नेमेटिसाइड (वाणिज्यिक ग्रासल्यूनक सूत्रक्रमिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों को बहुत कम मात्रा ही सूत्रक्रमिनाशक के रूप में पर्याप्त पाइ गई। इसलिए इन नैनोकणों में परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नेमेटिसाइड (सूत्रक्रमिनाशक) क्षमता की जांच इन विटो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

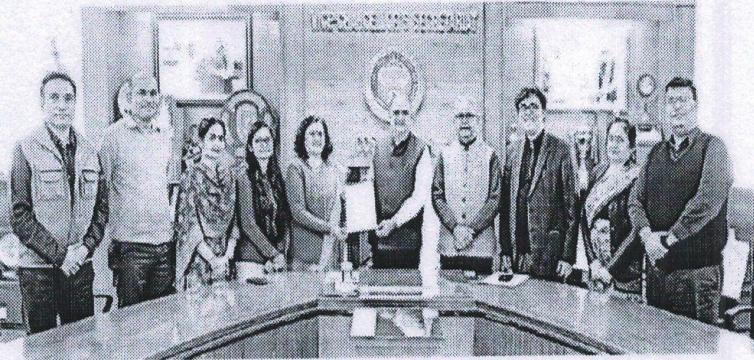
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	07.03.2024	--	--

दैनिक सवेरा

हक्कवि को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

कुलपति बोले, निमेटोड को
नियन्त्रण करने में कारगर
सावित होंगे सिल्वर नैनोक्पण

संवर्ग न्यूज़/सुरेण्डर साही
हिसार, 6 मार्च : चौथी घरण करण मिह
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेटी
(वेरायटी एचएम-1) का उत्तरांग करके
सिल्वर नैनोकेंज बनाने की विधि पर
भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान
किया गया है। इस विधि को
विश्वविद्यालय के आणविक जीव
विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना
विज्ञान विभाग (एपी बी एपी बी) की
पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पुणा खरब के
नेतृत्व में उनके पांचदशी शोधसंरचने डॉ.
कनिका राणी और डॉ. निशा देवी ने
विकासित किया है। इस विधि को पेटेंट
अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष
की अवधि के लिए 486872 संख्या
से पेटेंट अनुदान किया गया है।



कलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम के साथ।

विश्वविद्यालय के कृतप्रति प्रो. बी. आग काम्योजने ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पॉलीहाउस, प्रीनहाउस, बागवार्ना व सचिवायों में लट्ट नॉट निपोटोइ (नट्ट गाठ सूक्तक्रम) के संकरण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है और पॉलीहाउस में नियोनेत्र पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निपोटोइ कं

आवादी में बुद्धि हो जाते हैं और इनकी अत्यधिक सक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों को भारी अर्थीक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुख्यों द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों के लूट नोट निमिटोड पर टेस्ट किया। प्रो. काम्बोज ने बताया कि कमशियल

पिकल नैनीटास्टाइड (वाणिज्यिक मरणीयक सूखा-गिरावशक) की तुलना पुलंठी द्वारा निर्धारित हिल्चर नैनोकणों के बहुत कम प्राप्त हो सूखा-गिरावशक रूप में प्रसाप पाई गई। इसलिए इन हिल्चर नैनोकणों के विभिन्न कृपि-सम्पत्ति के लिए उद्योग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इनाम की गई

यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं

विधिविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं प्राचीनविज्ञानों के अधिकारा डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेट सुत्रों (वैज्ञानी एच.एम-1) के सूत अक्ष का उपाय काके उस सिल्वर नैनोकणों में परिवर्तित करने की बेठता विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नोटेसाइडल (स्मृतिगमनाशक) क्षमता की जांच इन विद्युत विधिविज्ञानों में भी ओर गई थी।

मूलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे

पौधों के इस्तेमाल में नैनों कणों जैसे बनाने की विधि में केमिकल्स का कम उपयोग होता है और क्रोड अरिहारक जहरीला अलशंका भी नैनों बनाने हैं। मुल्टीटो के इस्तेमाल से बनाए पए हिमोरे सिल्वर नैनों कण मिमोटोड कंज मारने में सक्षम पए पए हैं। जिसांग मूल्टी आरिहार इन सिल्वर नैनों कणों का उपयोग मिट्टोड मस्त्रधन का नियन्त्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी बजाए से लागभग सभी छोटी छोटी फसलों की उपज और गुणवत्ता को धूंधल नुस्खासन पहुंचता है। इस अवसर पर औसटी ३० और ४० ग्राम प्रति वर्ष संसाधन प्रधान नियन्त्रक छोटी मंजू महावा, मीडिया एवं डाइजर छोटी सुदृग आदि व एस्वरीसी कपिल और अरोदा अस्थिर रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	06.03.2024	--	--

हकृवि को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेही (धेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेट कारबलिय द्वारा पेटेट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम.बी.बी.एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेट अनुदान किया गया है।



ਕੁਲਾਪਤਿ ਪ੍ਰੋ. ਗੀ.ਆਰ. ਕਾਰਖੀਂਗ ਪੇਟੈਟ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨੇ ਵਾਲੀ ਟੀਮ ਦੇ ਸਾਥ

सचियों में रुट नॉट निमेटोड (जड़गांठ सूक्रकृपि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पौलीहाउस में नियन्त्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में बढ़ि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उआ पाती है जिसकी वजह से किसानों को आर्थिक नुकसान

उठाना पड़ता है। इसलिए हमने
मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर
मैनोकणों को रूट नैट निमेटोड प्र-
टेस्ट किया।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी
महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ.
नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट
मुलेटी (वेगयटी एच.एम-1) के
मूल अक्स का उपयोग करके उसे
सिल्वर नैनोक्रॉणों में परिवर्तित करने

की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकेपन एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए है। इन नैनोकेपनों में नैमीटिसाइडल (सूक्रकूमिनाशक) धमता की जांच इन विट्रो व इन विट्रो स्थितियों में भी की गई थी। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढीगड़ा, डॉ. मजु महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व कपिल अरोड़ा उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि किरण न्यूज	06.03.2024	--	--



Hari Kiran News
15h - १

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेट निमेटोड को नियंत्रित करने में कारगर साबित होगे सिल्वर नैनोकण : प्रो. कम्बोज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरापटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेट कार्यालय द्वारा पेटेट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एमबीबी ऐंड बी) की पूर्व विभागाधीक्षा डॉ. पुष्या खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेट अनुदत्त किया गया है।

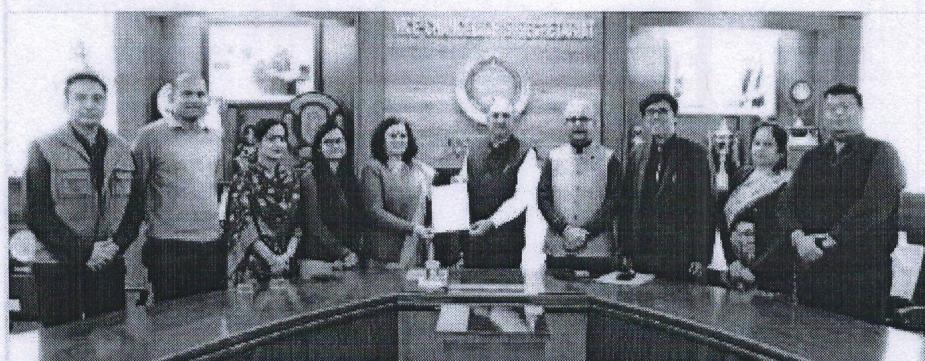
विश्वविद्यालय के कृषिपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा कि पाँली हाऊस, फ्रीन हाऊस, बागवानी व सजिलों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गाठ सूक्रकृषि) के संकरण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पाँली हाऊस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्यधिक संकरण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है। जिसकी वजह से किसानों की भारी आर्थिक नुकसान उठाना चाहता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के लिए सूक्रकृषि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानाकर का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच पहले तैब में, फिर रुक्नीन हाऊस में की, दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम था गए, इससे संबंधित और शायद कार्य जारी है।

प्रो. कम्बोज ने बताया कि कमर्शियल कैमिकल नेमैटिसाइड (वाणिज्यिक रासायनिक सूक्रकृषिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों की बहुत कम मात्रा ही सूक्रकृषिनाशक के रूप में प्रयाप्त थाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इजार की गई सिल्वर नैनोकण का बनाने की यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है।

यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर था गए हैं। विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानवीकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेट मुलेठी (वेरापटी एचएम-1) के मूल अर्क का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकण में परिवर्तित करने की वेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर था गए हैं। इन नैनोकणों में नेमैटिसाइड (सूक्रकृषिनाशक) क्षमता की जांच इन विटो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे पाई के इस्तेमाल से नैनो कणों को बनाने की विधि में कैमिकल का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम था गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनो कणों का उपयोग निमेटोड संकरण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है। जिसकी वजह से लगभग थोड़ी ढाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अनुरु ढींगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, भीडिया शलवाइजर डॉ. संदीप आर्य व एसवीसी कपिल अरोड़ा उपस्थित रहे।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	06.03.2024	--	--

हकूमि को मुलेटी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेटी (बैरायटे एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भासीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जैव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एमडी.बी.एड बी) की पर्यावरणात्मक डॉ. पृष्ठ खस्त के नेतृत्व में उनके पैटेंट ऑफिसर्स डॉ. कनिका सनी और डॉ. निशा केशी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदाता किया गया है।

विश्वविद्यालय के मुख्य प्रो. डॉ. आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पौलीहाङ्गास, ग्रीनलाइन, आगामी व सम्बिलों में रुट नैट निमेटोड (ज़ुड़-गंठ सूक्ष्मात्मि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पौलीहाङ्गास में निर्धारित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आवादी में चढ़ि हो जाती है और इसकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उआ पाती है। जिसकी बजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेटी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रुट नैट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के लिए सूक्ष्मकृषि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानाकर का सहयोग लिया गया। शोधात्मकों ने यह जांच पहले लैब में, फिर स्कॉन हाईडास में की, दोनों ही कैस में मुलेटी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रुट नैट निमेटोड को मारने में सफल पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है।



प्रो. काम्बोज ने बताया कि कमरिशल कैमिकल निमेटिसाइड (वाणिज्यिक ग्रामार्थिक सूक्ष्मकृमिनाशक) की तुलना में मुलेटी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों की बहुत कम मात्रा ही सूक्ष्मकृमिनाशक के रूप में प्रयोग पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इशारा दी गई सिल्वर नैनोकण बनाने की यह विधि प्राचीन, विभावती और स्थिर है।

यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं।

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. नील कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेटी (बैरायटे एच.एम-1) के मूल अक का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में पर्याप्त करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में

निमेटिसाइड (सूक्ष्मकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विटो व इन विको स्थितियों में भी की गई थी।

मुलेटी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे: पौधों के इसोमाल में नैनोकणों को बनाने की विधि में कैमिकल्स का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेटी के इसोमाल से बनाए गए इसमें सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सफल पाए गए हैं। किसान मुलेटी आधारित इन सिल्वर नैनोकणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी बजह से लगभग मात्रे खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को बेहीर नुकसान पहुंचता है।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढीगड़ा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व एसवीसी कमिल अरोड़ा उपस्थित हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	06.03.2024	--	--

हकूमि में खरीफ फसलों पर कृषि अधिकारी कार्यशाला 7 व 8 मार्च को

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 6 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में 7 व 8 मार्च को कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 आयोजित की जाएगी। कार्यशाला का शुभारंभ बतौर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज करेंगे, जबकि अतिरिक्त मुख्य सचिव, कृषि और किसान कल्याण, पशुपालन व डेयरी विभाग, हरियाणा सरकार श्री अंकुर गुप्ता कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद होंगे। साथ ही कार्यशाला में निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग एवं प्रबंध निदेशक, हरियाणा बीज विकास निगम श्री राजनारायण कौशिक, आईएएस तथा अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण, हरियाणा डॉ. आर.एस. सोलंकी भी उपस्थित रहेंगे। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित कराई जाने वाली दो दिवसीय कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी व विस्तार कार्यकर्ता भाग लेंगे।

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि कार्यशाला में आगामी



खरीफ मौसम की फसलों में लागू की जाने वाली नई तकनीकों पर आधारित सिफारिशों को अंतिम रूप दिया जाएगा। इसके अलावा वैज्ञानिक तथा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी फसलों में आई समस्याओं के समाधान पर भी विचार-विमर्श करेंगे।

इस अवसर पर कृषि अधिकारियों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का दौरा करवाकर उन्हें फसलों, फलों तथा सब्जियों पर किए जा रहे परीक्षणों एवं अनुसंधानों की जानकारी दी जाएगी। साथ ही कार्यशाला के दौरान विभिन्न तकनीकी सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिनमें विभिन्न फसलों की समग्र सिफारिशों पर चर्चा की जाएगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	१०.३.२५	५	६-८

दैनिक भास्कर

**बसंतकालीन मक्का की बिजाई के लिए एचएम-10 व 11, आईएमएच-225 व 226 किस्मों का करें इस्तेमाल
किसान दोहरी पंक्ति में बिजाई करके बचा सकते हैं 25 प्रतिशत तक पानी**

भास्कर न्यूज | हिसार

बसंतकालीन मक्का की बिजाई के लिए रेतीली व अर्ध दोमट मिट्टी तथा अच्छे जल निकासी वाले खेतों का चयन करें। अच्छी पैदावार के लिए लंबी व मध्यम अवधि वाली संकर किस्मों का प्रयोग करना चाहिए। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि साधारण मक्का की किस्म एच.एम. 10 व एच.एम. 11, उच्च क्वालिटी प्रोटीन मक्का की किस्म एच.व्यू.पी.एम. 1 व एच.व्यू.पी.एम. 4 का इस्तेमाल करें। हाल ही में विकसित की गई किस्मों में से आईएमएच. 225 एवं आईएमएच. 226 का इस्तेमाल कर सकते हैं।

क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र करनाल के निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग के अनुसार बिजाई से पहले खेत को तैयार कर लें, खेत को चार से पांच जुताई करके दो बार सुहागा लगाएं, ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाएं और खेत में ढेले बिलकुल न रहें। बिजाई जल्द से जल्द पूरी कर लें। बिजाई में देरी करने से गोभ में प्रोह मक्की का आक्रमण बढ़ता है। साधारण मक्का व उच्च क्वालिटी प्रोटीन मक्का के लिए 8 किलोग्राम, स्वीट कॉर्न के लिए 3-4 किलोग्राम व बेबी कॉर्न के लिए 12 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ की दर से



दोहरी पंक्ति में की गई मक्का की खेती।

• बिजाई की विधि: बिजाई के लिए न्यूमैटिक प्लांटर व बेड प्लांटर का उपयोग करें। मक्का की बिजाई के लिए दोहरी पंक्ति रोपण विधि कारगर रहती है। इस विधि से बिजाई करने पर 20-25 प्रतिशत पानी की बचत होती है।

• खाद व उर्वरक: अधिक पैदावार के लिए पहले गोबर की खाद 60 विंटल प्रति एकड़ की दर से डालें। सिफारिश की गई पूरी फोस्फोरस (24 किलोग्राम), पोटाश (24 किलोग्राम), जिंक सल्फेट (10 किलोग्राम) व एक तिहाई नाइट्रोजन (20 किलोग्राम) बिजाई के समय डालें।

प्रयोग करें। मक्का में बिमारियों से बचाव के लिए बीज को 4 ग्राम थीरम या 2.5 ग्राम कैप्टान तथा प्रोह मक्की के नियंत्रण

के लिए 7 मि.ली. इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस.सी.) प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें।